प्रिय विद्यार्थियों

अपनी हिंदी की कक्षा को आगे बढ़ाते हुए हम आज अपनी पाठ्य पुस्तक ‘ज्ञान सागर’ का पाठ-2 ‘असल धन’ आरंभ करते हैं

पाठ-2 असल धन
लेखक- अबराद मोहसिन एवं कामरान मोहसिन

पाठ – परिचय

‘असल धन’ नामक पाठ में दारा नामक चरवाहे के परिश्रमी स्वभाव और बुद्धिमत्ता का वर्णन है जो अपनी बुद्धि के बल पर ईरान के शाही दरबार में स्थान बना लेता है और एक प्रांत का गवर्नर बन जाता है, परन्तु अपनी ईमानदारी नहीं छोड़ता है |

ईरान के किसी गाँव में दारा नाम का एक चरवाहा (भेड़ चराने वाला) रहता था | वह बहुत गरीब था | बस दिन में दो समय रुखी-सूखी रोटी मिल जाती थी | पहनने के लिए भेड़ की ऊन से बने फटे-पुराने कपड़े थे और रहने के लिए एक छोटी-सी झोपड़ी थी जिसकी आधी छत गिर चुकी थी | गरीब होते हुए भी गाँव वाले उसका बहुत सम्मान करते थे क्योंकि वह बड़ा ही बुद्धिमान था | गाँव वाले अपनी कठिन और जटिल समस्याएँ उसके पास ले कर आते और वह अपनी बुद्धिमता से सब समस्याओं को सुलझा देता था |

Scanned with CamScanner

धीरे-धीरे उसकी बुद्धिमानी के चर्चे ईरान के शाह (राजा) के कानों तक पहुँचे |उन दिनों शाह भी कई समस्याओं का सामना कर रहा था| एक दूत को भेजकर शाह ने अपनी समस्या का सुझाव माँगा |दारा ने अपनी सूझ-बूझ से समस्या को सुलझा दिया और शाह ने प्रसन्न होकर दारा को राजमहल बुलवा लिया और दारा को राज्य की समस्याओं को सुलझाने के लिए अपने राजसिंहासन के पास ही बिठाने लगा |

जैसे-जैसे शाह के दरबार में दारा का सम्मान बढ़ने लगा, वैसे-वैसे दरबारियों के मन में उसके लिए ईर्ष्या (जलन) की भावना बढ़ने लगी |वे दारा के खिलाफ़ शाह के कान भरने लगे लेकिन शाह दारा की ईमानदारी और बुद्धिमता से इतना प्रभावित था कि वो दरबारियों की किसी बात पर विश्वास नहीं करता था|

CS Scanned with CamScanner

एक बार शाह ने दारा को उत्तरी ईरान के प्रांत का गवर्नर बनाकर भेजा क्योंकि वहाँ का शासन बिगड़ चुका था | सरकारी अधिकारी और कर्मचारी भ्रष्ट थे | जान और माल सुरक्षित नहीं था | लोग मनमानी कर रहे रहे थे और पूरे नगर में अराजकता फ़ैली हुई थी | चारों और हाहाकार मचा हुआ था | दारा नगर-नगर जाकर दरबार लगाता और दोषियों को सजाएँ देकर लोगों को न्याय दिलाता | धीरे-धीरे प्रांत के हालात सुधरने लगे |

ारा प्रांत के अनेक स्थानों का दौरा घोड़े पर सवार होकर करता था | दौरे पर जाते समय सके साथ एक घोड़ा भी होता था जिसकी पीठ पर एक बड़ा-सा बक्सा रखा होता था | ारा बक्से के बिना नगर से कभी नहीं निकलता था | दरबारियों ने शाह से कहा कि जिस दारा को आप बुद्धिमान और ईमानदार समझते हैं वह एक बक्से को अपने साथ खता है और उस बक्से में प्रजा से लूटा गया धन एकत्र करता है | शाह बड़ी उलझन में ड़ गया कि यदि दारा बेईमान है तो संसार में कोई भी ईमानदार नहीं हो सकता | शाह । दूत भेजकर दारा को दरबार में हाज़िर होने के लिए कहा |

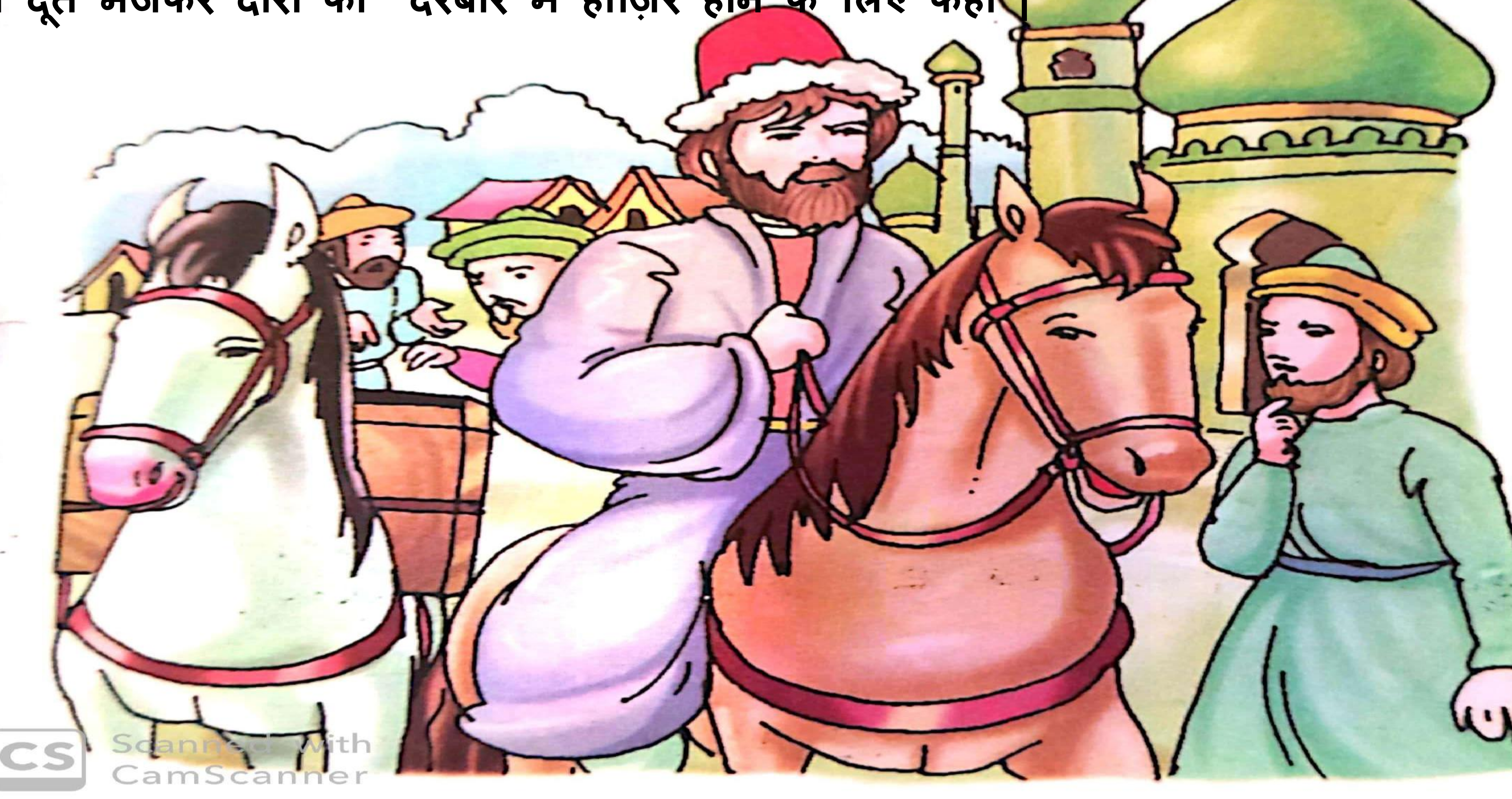

CS Scanned with CamScanner

शाह ने क्रोधित होकर दारा से कहा हमने तुम पर भरोसा किया, सम्मान दिया और तुमने ही हमे निराश किया | दारा ने सिर झुकाकर बड़ी ही विनम्रता से कहा कि इस बक्से में मेरा असल धन है | जब उसने बक्सा खोला तो सबकी आँखें आश्चर्य से फैल गई |उसके अंदर भेड़ की ऊन से बना हुआ एक पुराना कोट था, जैसा कि चरवाहे पहना करते हैं | दारा ने बताया कि वह इसी को पहनकर भेड़ें चराया करता था और इसे इसलिए साथ रखता है ताकि यह कोट उसे याद दिलाता रहे कि वह एक गरीब चरवाहा था और उसके मन में कभी घमंड पैदा न हो | सभी का सिर शर्म से झुक गया और शाह बोला “ धन्य है यह देश जिसने दारा जैसे महान इंसान को जन्म दिया !”

CS Scanned with CamScanner

पाठ के व्याकरणिक बिंदु (जी॰ओ॰)

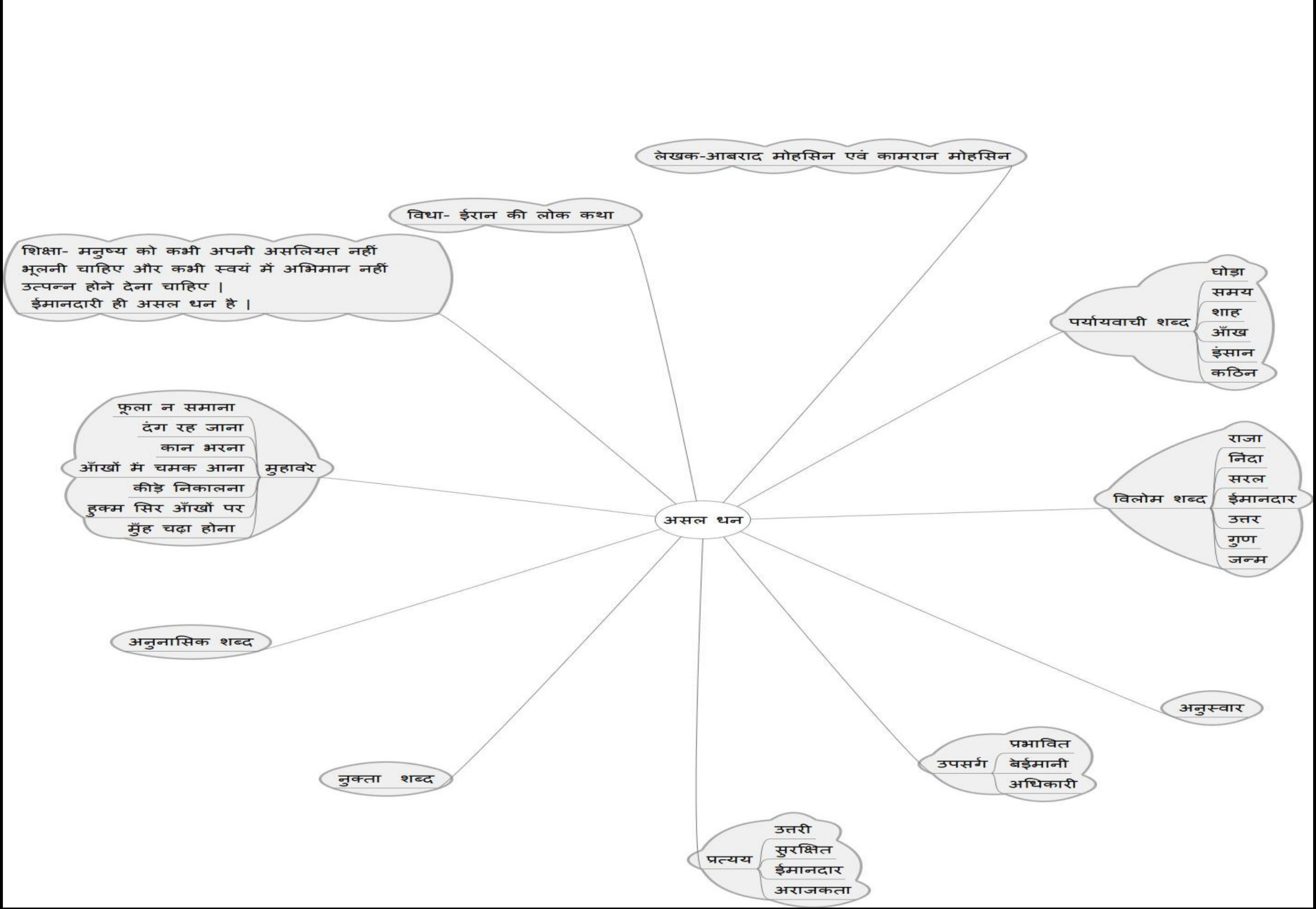

दारा की चारित्रिक विशेषताएँ

शाह की चारित्रिक विशेषताएँ

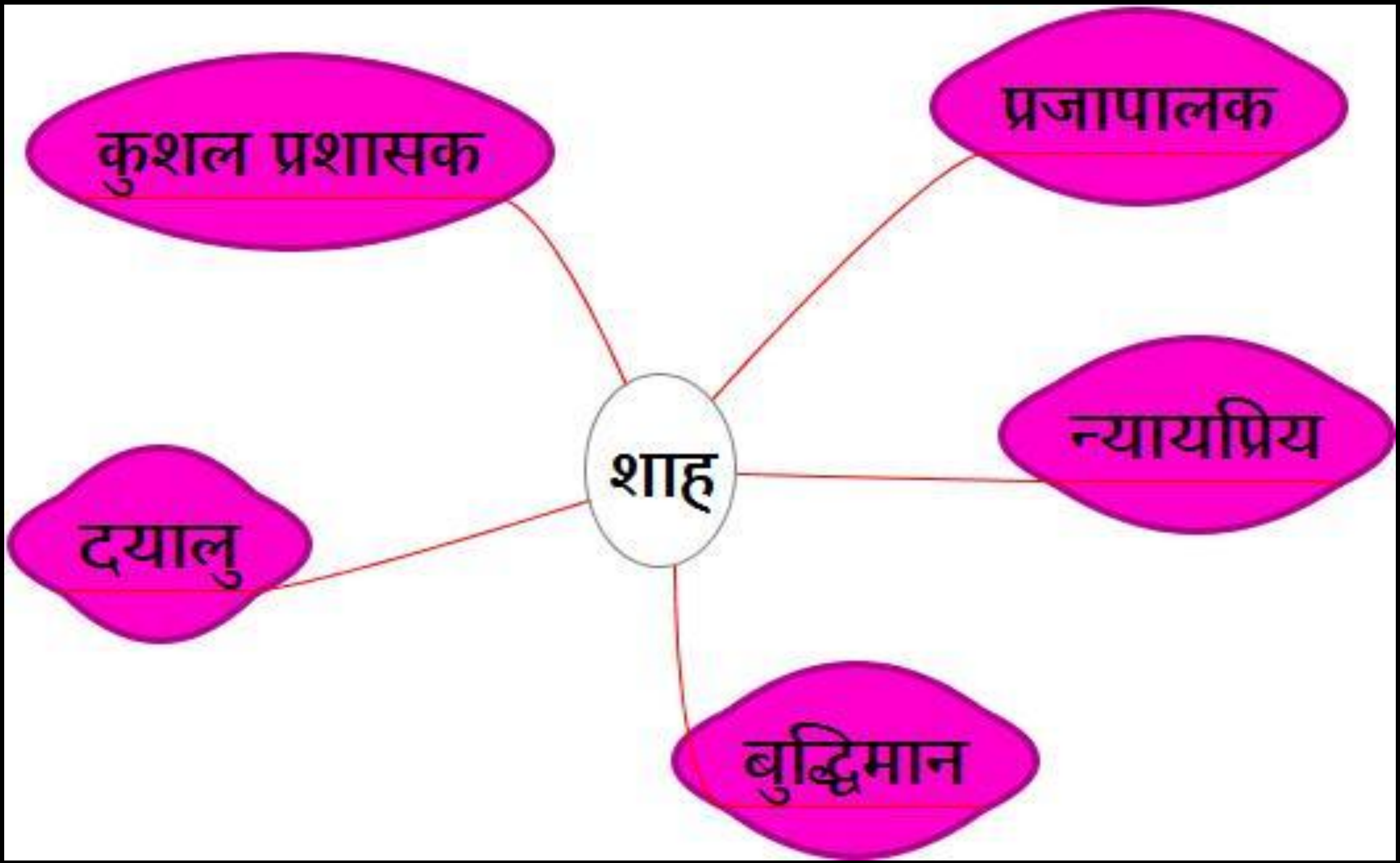

दरबारियों की चारित्रिक विशेषताएँ